दिनांक 09 अक्टूबर, 2009 को इलाहाबाद संग्रहालय, इलाहाबाद में बांसुरी वादक, पं0 हरि प्रसाद चौरसिया के सम्मान समारोह हेतु महामहिम श्री राज्यपाल का उद्‌बोधन।

देवियों और सज्जनों,

आज यहाँ इस ऐतिहासिक इलाहाबाद संग्रहालय में आयोजित सुप्रसिद्ध बांसुरी वादक, पं0 हरि प्रसाद चौरसिया के सम्मान समारोह में उपस्थित होने पर मुझे अत्यन्त खुशी है।

इलाहाबाद संगहालय समिति के अध्यक्ष होने के नाते मैं यहाँ की गतिविधियों से परिचित हूँ। पं0 जवाहर लाल नेहरू की प्रेरणा से इस संग्रहालय की स्थापना हुई, जो इतिहास, कला एवं संस्कृति के

मर्मज्ञ थे। सन् 1986 में इस संग्रहालय को राष्ट्रीय महत्व का घोषित किया गया।

आज के इस अवसर पर मैं 20वीं सदी के कला, इतिहास एवं संस्कृति के पुरोधा आनन्द कुमार स्वामी को भी अपने श्रद्धा–सुमन अर्पित करता हूँ। उन्होंने सौन्दर्यशास्त्र, साहित्य, धर्म, दर्शनशास्त्र एवं समाजशास्त्र पर अनेक पुस्तकें एवं लेख लिखे। इसके साथ ही वे बौद्धदर्शन में भी पारंगत थे। स्वामी जी का भारतीय दर्शन, धर्म, कला, संगीत, विज्ञान एवं साहित्य के क्षेत्र में अविस्मरणीय योगदान रहा है।

त्रिवेणी के संगम पर स्थित इस पावन नगरी इलाहाबाद का अपना एक गौरवशाली सांस्कृतिक, आध्यात्मिक एवं साहित्यिक महत्व

रहा है। त्रिवेणी का सौन्दर्य तथा उसके घाट सहज ही मन को मोह लेते हैं। यह वह नगरी है, जिसने देश को कला और साहित्य से जुड़ी हुई अनेक महान विभूतियां दी हैं। इसी की एक कड़ी आज यहाँ सम्मानित प्रसिद्ध बांसुरी वादक, पं0 हरि प्रसाद चौरसिया जी हैं, जिन्होंने इसी नगर में जन्म लेकर देश–प्रदेश का नाम विश्व में रोशन किया है।

हमारी भारतीय संस्कृति में आदिकाल से ही संगीत और साहित्य को गौरवशाली स्थान प्राप्त रहा है। इसका उल्लेख हमारे आदि ग्रन्थों में भी मिलता है। यदि भारतीय संस्कृति के विकास पर नजर डाली जाये तो पता चलेगा कि यहाँ की संस्कृति की सभी विधाओं––संगीत,

साहित्य, चित्रकला तथा नाट्यकला का विकास धार्मिक तथा आध्यात्मिक विकास के साथ हुआ है। संगीत, नृत्य और नाट्य विधा तीनों को एक दूसरे का पूरक माना जाता है। इसमें संगीत को प्रथम स्थान प्राप्त है। संगीत मानव–जीवन की एक उदात्त अनुभूति है। इससे मानव को सुख, उल्लास तथा दिव्यानन्द की अनुभूति होती है। हमारे सन्त संगीत–साधना को ईश्वर प्राप्ति का एक साधन मनाते थे।

प्रसिद्ध बांसुरी वादक, पं0 हरि प्रसाद चौरसियो ने संगीत की शुरूआत तबला वादक के रूप में की थी, लेकिन बाद में बांसुरी वादन को अपने जीवन का लक्ष्य बना लिया। इन्होंने संगीत की प्रारम्भिक शिक्षा वाराणसी में पं0 भोलानाथ जी और विदुषी अन्नपूर्णा

देवी जैसे महान गुरूओं से प्राप्त की है। पं0 जी का ध्रुववादन श्रोताओं में बहुत लोकप्रिय है। इनके प्रशंसक केवल देश में ही नहीं, विदेशों में भी काफी बड़ी संख्या में है, जो इनकी मुरली के सुर से आनन्दित होकर भाव विभोर होते हैं।

पं0 हरि प्रसाद जी को अनेक राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय पुरस्कारों से नवाजा जा चुका है, जिनमें संगीत नाटक अकादमी पुरस्कार, पद्मश्री, पद्म भूषण, कोर्णाक सम्मान और यश भारती प्रमुख हैं। आपने पं0 शिव कुमार शर्मा के साथ मिलकर भारतीय सिनेमा सिलसिला, लम्हें, चांदनी आदि फिल्मों में संगीत भी दिया है। मुझे यह जानकर और भी ख़ुशी है कि संगीत की शिक्षा देने हेतु आप

द्वारा गुरूकुल की स्थापना की गई है, जहाँ गुरू–शिष्य परम्परा से देश एवं विदेश के लोगों को संगीत की शिक्षा दी जाती है।

हमारे देश एवं प्रदेश में कला प्रतिभाओं की कोई कमी नहीं है। प्रदेश की शास्त्रीय संगीत कला को, जो हमारी बहुमूल्य धरोहर है को न केवल बचाये रखा जाय, बल्कि इसके विकास एवं नये–नये प्रयोगों पर भी ध्यान दिया जाय।

मैं एक बार फिर पं0 हरि प्रसाद चौरसियों को हार्दिक शुभकामनाएँ प्रेषित करता हूँ।

धन्यवाद।